अध्ययन सामग्री
बी० ए० पार्ट - 3
हिन्दी
डॉ० वज्रांग प्रताप केसरी
हिन्दी विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा।
दिनांक :- 17/02/2024

अप्रस्तुत प्रशंसा अलंकार :- इस अलंकार में अप्रस्तुत (उपमान) का वर्णन कर प्रस्तुत उपमेय का बोध कराया जाता है। यहाँ अप्रस्तुत वाच्य होता है और प्रस्तुत व्यंग्य। अतः अप्रस्तुत वाच्य से प्रस्तुत व्यंग्य का ज्ञान कराना ही इस अलंकार की प्रमुख विशेषता है।

मानस सलिल सुधा प्रतिपाली। जिअइ कि लवन पयोधि मराली।
नव रसाल बन बिहरनसीला। सोह कि कोकिल बिपिन करीला॥

यहाँ हंसिनी और कोयल (उपमान) का दृष्टान्त देकर यह बताया गया है कि सुकुमारी सीता वनवास का कष्ट सहन नहीं कर सकती।

क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दंतहीन, विषहीन विनीत सरल हो॥

स्पष्टीकरण - यहाँ अप्रस्तुत सर्प के विशेष वर्णन से सामान्य अर्थ की प्रतीति होती है कि शक्तिशाली पुरुष को ही क्षमादान शोभती है। यहाँ अप्रस्तुत प्रशंसा है।